SAMWAAD

Chetna Vikas Mulya Shiksha (CVMS) Cell

School of Consciousness Development &
Value Education

Faculty of Transformative Education (FoTE)

भूमि स्वगर्ताम् यातु, मनुष्यो यातु देवताम् ।
धर्मो सफलताम् यातु, नित्यम् यातु शुभोदयम् ।।

DIVYA PATH SANSTHAN

ATMIYA UNIVERSITY
RAJKOT, GUJARAT (INDIA)

BRAHMA SWAROOP HARIPRASAD SWAMIJI MAHARAJ

Swamiji Maharaj envisioned the Atmiya Group of Institutions as a center for holistic, value-based education that nurtures enlightened and responsible individuals. His guiding insight, "Bhanava Jevi to Brahma Vidya Chhe", reflects his foresight that education should enable individuals to understand life, realize their higher purpose and embody morality, integrity, compassion, discipline & spiritual awareness.

PRAGAT GURUHARI PREMSWAROOP SWAMIJI MAHARAJ

Swamiji Maharaj, spiritually inspires Atmiya University to continue its mission of humanizing education by blending academic excellence with values, ethics & social responsibility. His inspiration encourages students to cultivate inner wisdom, discipline, compassion & a lifelong commitment to serve society with integrity and purpose.

SWAMI SHREE TYAGVALLABH SWAMIJI MAHARAJ

Atmiya University is committed to value-based, holistic education that nurtures competent professionals and responsible individuals with right understanding. Over the past decade, the University has strengthened awareness, institutional capacity & the integration of human values into education, fostering ethical living, harmonious relationships and holistic development. May this e-booklet inspire readers to cultivate understanding, purpose and harmony in both their personal and professional lives.

ARTICLE - 1

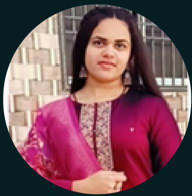

Hetvi R. Sidhdhapara,
Department: CS & IT
Atmiya University, Rajkot

"जीवनविद्या सुखी जीवन जीने की कला सिखाती है"

जीवनविद्या हमे जीवन का मतलब, श्रेष्ठ जीवन, कर्तव्यनिष्ठा, उचित मानसिकता सिखाते हैं। जीवन का मतलब है खुदको समझना। हमारे जीवन में चार अवयव होते है: १) स्वयं २) परिवार ३) समाज ५) प्रकृति और इसे ही व्यवस्था कहते है अगर हमे इनमें समाधान आजाएं तो हम सुखी है।

कोई भी चीज को इस्तमाल करते समय अगर हमें उसके स्रोत, उसके पीछे लगी मेहनत और श्रम पता होगा तो हम उसका दुरुपयोग करने से पहले सोचेंगे या उसका सहीसे इस्तमाल कर पाएंगे और इसे कहते है हमारी दृष्टि।
हमारे सोचने, बोलने, मानने और होने में ज्यादा गैप है तो हम खुदको अभिभी नहीं पहचानते । तो तब हमे खुद के ऊपर काम करना पड़ेगा। अगर हममें समझ और सॉफ्ट स्किल्स होगी तो हममें सही मानव चेतना वाली दृष्टि,स्वभाव और वैसे कार्यक्रम सब कुछ होगा । हम समाधान और सुख के साथ जीवन जी सकेंगे । इसी समझ और सॉफ्ट स्किल्स की शिक्षा का नाम है चेतना विकास मूल्य शिक्षा।

समझ में आता है स्वयंवके प्रति विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक और व्यवसाय में स्वावलंबी। यही हमे जीवन विद्या से सीखने को मिलता है।

" सह-अस्तित्व ही अस्तित्व का मूल स्वरूप है;
सभी इकाइयाँ परस्पर पूरक हैं "

स्वयं के प्रति विश्वास का मतलब है संबंध की पहचान, श्रेष्ठता का सम्मान मतलब यथार्थ मूल्यांकन जो जैसा है उसका वैसे ही मूल्यांकन करो न ज्यादा ना कम। जीवन में अमीर या गरीब नहीं बनना है,जीवन में समृद्ध बनना है।हमारे पास जो है उसका अहसास करना है।वही हे असली सुख और खुशी। असली सुख वही है जहां हमारी सुविधाएं किसी और को भी मदद आए।

भय के बिना जीवन जीना वही है असली संस्कार। साधना से संकल्प बनता हे और संकल्प से चेतना विकास। साधना से अध्ययन,अनुभव और ज्ञान मिलेगा।ज्ञान पारदर्शी होता है।

हमारे अंदर शिक्षा और समझ दोनों आवश्यक है। अगर हमारे अंदर दोनो है तो हममें जागृति होगी और साथ ही साथ व्यवस्था होगी। जीवन मे सही समझ का होना बहुत आवश्यक है अगर हममे सही समझ होगी तो हम कोई भी मुसीबत को आराम से हल कर पाएंगे। हमारी समझ और दृष्टि न्याय, धर्म और सत्य होना जरूरी है। जीवनविद्या हमारा जीवन सुंदर और सफल बनाती है। में जीवनविद्या के प्रणेता पूज्य ए. नागराज जी का दिल से आभार मानती हु कि उन्होंने हमें एक बहुत अच्छी, नई और सही सोच दी। साथ मे उन सभी शिक्षकों को धन्यवाद कहना चाहती हु जिनसे मुझमें ये समझ और दृष्टि आई।'

- Courtesy: Jigar Ratnottar, CVMS Cell, Atmiya University

“ मानव का वास्तविक मूल्य उसके आचरण से प्रकट होता है ”

ARTICLE - 2

डॉ. कैरवी राठौड़
जीवन विद्या अध्ययनार्थी एवं प्रैक्टिशनर,
सीवीएमएस सेल, आत्मीय विश्वविद्यालय

“ चरण–2: चिंतन एवं अनुभव (नवंबर 2023 से जनवरी 2024) “

मध्यस्थ दर्शन और सह-अस्तित्व पर आधारित **Certificate Program in Consciousness Development and Value Education (2023–2024)** ने मेरे जीवन-दृष्टिकोण में गहरा, सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन किया। इस अध्ययन के माध्यम से मैंने समझा कि मानव जीवन केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह चेतना, समझ, मूल्यों, आचरण, व्यवहार और सामाजिक सहभागिता पर आधारित एक संतुलित प्रक्रिया है।

इस पाठ्यक्रम ने मुझे यह अनुभव कराया कि मानव जीवन एक सुव्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण और मूल्य-आधारित व्यवस्था है, जिसे सही समझ के साथ ही सार्थक दिशा दी जा सकती है। मैंने जाना कि यह संसार केवल भौतिक वस्तुओं का समूह नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व पर आधारित एक समग्र व्यवस्था है, जहाँ पदार्थ, प्राण और चेतना परस्पर पूरक हैं। पहले मैं विकास को केवल भौतिक प्रगति से जोड़कर देखती थी, लेकिन अब यह स्पष्ट हुआ कि वास्तविक विकास आंतरिक जागरूकता, संतुलन और समझ के विकास में निहित है।

“ हर मानव सम्मान और विश्वास का अधिकारी है ”

इस अध्ययन ने मुझे यह भी सिखाया कि केवल ज्ञान प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे व्यवहार में उतारना आवश्यक है। धर्मनीति, राज्यनीति और अर्थनीति के माध्यम से मैंने नैतिकता, संसाधनों के संतुलित उपयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व का महत्व समझा। इस नई दृष्टि ने मुझे यह सिखाया कि मेरे प्रत्येक कार्य का एक निश्चित परिणाम होता है, इसलिए मुझे अपने हर निर्णय को सोच-समझकर लेना चाहिए। इससे मेरे भीतर समाज के प्रति जिम्मेदारी और संवेदनशीलता का विकास हुआ। वास्तविकता, सत्य और यथार्थता के अध्ययन ने मेरे कई भ्रम दूर किए। अब मैं किसी भी विचार या तथ्य को अनुभव, तर्क और विवेक के आधार पर समझने का प्रयास करती हूँ।

इससे मेरे सोचने का दृष्टिकोण अधिक संतुलित और जागरूक बना है। साथ ही, मैंने यह भी समझा कि अति-आदर्शवाद और अति-भौतिकवाद दोनों ही जीवन में असंतुलन उत्पन्न करते हैं, जबकि संतुलित दृष्टिकोण ही सही मार्ग प्रदान करता है। बंधन और मुक्ति की अवधारणा ने मेरे जीवन को विशेष रूप से प्रभावित किया। मैंने अनुभव किया कि तनाव, चिंता और असंतोष का मूल कारण बाहरी परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि हमारी गलत धारणाएँ और अज्ञानता हैं। जागरूकता, सही समझ और संतुलित आचरण को अपनाने से मेरे भीतर धैर्य, आत्मविश्वास और मानसिक संतुलन विकसित हुआ। स्वयं को दृष्टा, कर्त्ताऔर भोगता के रूप में समझने से जीवन के प्रति मेरी दृष्टि अधिक स्पष्ट हुई।

व्यवहारिक शिक्षाओं ने मुझे यह समझाया कि इंद्रियों का नियंत्रण दमन से नहीं, बल्कि सही समझ और मूल्यों से संभव है। ध्यान और आत्मनिरीक्षण की प्रक्रिया ने मुझे अपने विचारोंऔर व्यवहार को समझने में सहायता दी, जिससे मेरे भीतर संतुलन और आत्मनियंत्रण का विकास हुआ।

“ समझ विकसित होने पर संघर्ष स्वतः कम होने लगता है ”

मानव चेतना और मनोविज्ञान के अध्ययन से मैंने जाना कि मन, बुद्धि, चित्त और आत्मा की प्रक्रियाएँ ही हमारे व्यवहार को निर्धारित करती हैं। 122 आचरणों की संरचना ने आत्मविश्लेषण की प्रेरणा दी और अपने भीतर झाँकने की क्षमता विकसित की। अब मुझे यह अनुभव होता है कि आंतरिक संतुलन स्थापित होने पर बाहरी जीवन भी स्वतः संतुलित हो जाता है।

इस पाठ्यक्रम ने मुझे धैर्य, करुणा, क्षमा, उदारता और कृतज्ञता जैसे मानवीय गुणों को जीवन में अपनाने की प्रेरणादी। पहले मैं केवल अपने दृष्टिकोण तक सीमित रहती थी, लेकिन अब मैं दूसरों की परिस्थितियों को समझने और उनके प्रति सहानुभूति रखने का प्रयास करती हूँ।

अंततः, मैंने यह समझा कि सही ज्ञान का वास्तविक प्रमाण हमारे व्यवहार, संबंधों और सामाजिक सहभागिता में दिखाई देता है। जब समझ, मूल्य और आचरण में संतुलन होता है, तभी व्यक्ति स्वयं, समाज और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापितकर पाता है।

मेरे लिए यह पाठ्यक्रम केवल एक शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा में समझने और मूल्य-आधारित जीवन जीने की प्रेरणादायक प्रक्रिया रहा है। अब मेरा प्रयास रहेगा कि मैं इन शिक्षाओं को अपने दैनिक जीवन में अपनाकर स्वयं तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकूँ।

“ भय और लालच अज्ञानता के परिणाम हैं “

ARTICLE - 3

Shital Kacha
B. Sc. Microbiology (sem - 2)
Atmiya University

“ Coexistence: A Way of Living “

In the quiet fields of Parda’s land,
A searching heart came to understand,
Not through noise or worldly race,
But through simplicity, love & grace.

I once believed such paths were small,
A place for dreamers, not for all.
Yet truth arrived like morning light,
And gently changed my inner sight.

Among the people, calm & kind,
I saw the peace all humans find,
When ego fades and hearts align,
In coexistence, pure divine.

Madhyasth Darshan softly said,
“Life is not a race to be led
By endless wants & restless fire,
But balanced living beyond desire.”

“ मानव जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक उपलब्धि नहीं,
बल्कि समझ और संतुलन है “

I learned the sacred art of relation -
With self, with family, every heart;
With society, nature, earth & sky,
Where harmony teaches true love.

No glittering screens, no shallow show,
Yet deeper happiness continued to grow.
For joy was found in mindful deeds,
In farming hands and simple needs.

Self-confidence rooted in truth so deep,
Respect for all that life must keep;
Balance in thought, in work, in role,
And social harmony within the soul.

Critical thinking, clarity of mind,
Wise decisions gentle & kind;
Communication honest and clear -
The skills that bring humanity near.

And now within my journey’s way,
I know that peace is lived each day.
When human beings truly learn
To live with all, not just to earn.

In Jivan Vidhya I came to see
The beauty of living consciously -
A life of balance, purpose & care,
Where coexistence blooms everywhere.

“ मन, बुद्धि, चित्त और आत्मा की समरसता से व्यक्तित्व संतुलित बनता है “

ARTICLE - 4

श्री गोविंद वागड़िया

सहायक प्राध्यापक, औद्योगिक रसायन विभाग,
विज्ञान संकाय, आत्मीय विश्वविद्यालय

" सहअस्तित्व आधारित शिक्षा : एक जागृत शिक्षक की भूमिका "

आज की शिक्षा व्यवस्था अभूतपूर्व तकनीकी प्रगति, प्रतिस्पर्धा और सूचना-विस्फोटके युग में प्रवेश कर चुकी है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में ज्ञान, कौशल और करियर निर्माण पर विशेष बल दिया जा रहा है, परंतु इसके साथ ही एक महत्वपूर्ण प्रश्न उभरता है—क्या शिक्षा केवल जीविका अर्जन का माध्यम है, या वह मनुष्य को जागृत, संवेदनशील और उत्तरदायी बनाने की प्रक्रिया भी है?

इसी संदर्भ में मध्यस्थ दर्शन – जीवन विद्या सहअस्तित्व आधारित शिक्षा की एक ऐसी दृष्टि प्रस्तुत करता है, जो शिक्षा को केवल सूचना या रोजगार तक सीमित नहीं मानती, बल्कि मानव में "जागृत चेतना" के विकास का माध्यम मानती है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को भय, प्रतिस्पर्धा और उपभोगवाद से मुक्त कर समझ, विश्वास, समाधान और सहअस्तित्व पर आधारित बनाता है।

" स्वयं को समझना ही जीवन को समझने की शुरुआत है "

- **शिक्षा का मूल उद्देश्य: मानव चेतना का विकास**

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य छात्र को "जीव चेतना" से "मानव चेतना" की ओर उन्मुख करना है। जब व्यक्तिकेवल अपनी सुविधा, लाभ और स्वार्थ के आधार पर निर्णय लेता है, तब वह सीमित दृष्टि में कार्य करता है। किंतु जब वही व्यक्ति न्याय, सत्य, धर्म और सहअस्तित्व के आधार पर सोचने लगता है, तब वह जागृत मानव बनता है।

ऐसी शिक्षा विद्यार्थियों में केवल बौद्धिक विकास नहीं करती, बल्कि उनमें जीवन के प्रति उत्तरदायित्व, आत्मविश्वास और सामाजिक संवेदनशीलता का विकास भी करती है। इसका अंतिम लक्ष्य है - समाधान, समृद्धि, अभय और सहअस्तित्व से युक्त समाज की स्थापना।

- **मूल्यांकन की नई दृष्टि**

वर्तमानशिक्षा प्रणाली प्रायः अंकों, रैंक और प्रतिस्पर्धा पर आधारित है। इससे विद्यार्थियों में तनाव, भय और तुलना की भावना बढ़ती है। सहअस्तित्व आधारित शिक्षा भय और प्रतिस्पर्धा के स्थान पर विश्वास, सहयोग और समाधान को महत्व देती है। यह विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सामाजिकउत्तरदायित्व और संवेदनशीलता का विकास करती है। यह शिक्षा "सिर्फ सफल बनने" की नहीं, बल्कि "मानव बनने" की दिशा प्रदान करती है।

- **शिक्षक की भूमिका**

सहअस्तित्व आधारित शिक्षा में शिक्षक की भूमिका केवल विषय विशेषज्ञ की नहीं, बल्कि एक जागृत मार्गदर्शक की होती है। शिक्षक अपने व्यवहार, संवाद और जीवन मूल्यों के माध्यम से विद्यार्थियों में विश्वास, वात्सल्य और प्रेरणा का वातावरण निर्मित करता है।

" सही समझ ही सही आचरण का आधार है "

गुरु–शिष्य संबंध यहाँ औपचारिकता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पारस्परिक सम्मान और आत्मीयता पर आधारित होता है। शिक्षक विद्यार्थियों को केवल "प्रतिस्पर्धा" के लिए तैयार नहीं करता, बल्कि "उभय तृप्ति" और सहयोग की भावना विकसित करता है।

- **शिक्षा और समाज का एकीकरण**

मध्यस्थ दर्शन शिक्षा को समाज और प्रकृति से जोड़ने की बात करता है। विज्ञान, प्रबंधन और तकनीकी शिक्षा तभी सार्थक है जब वह मानव और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करे।

आज जब पर्यावरणीय संकट, मानसिक तनाव और सामाजिक विघटन बढ़ रहे हैं, तब सहअस्तित्व आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को प्राकृतिक संसाधनों के संवेदनशील उपयोग, सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत विकास की दिशा में प्रेरित करती है। यह शिक्षा हमें सिखाती है कि वास्तविक प्रगति केवल भौतिक विकास नहीं, बल्कि मानव में जागृति, नैतिकता और समरसता का विकास है।

- **निष्कर्ष**

सहअस्तित्व आधारित शिक्षा केवल एक वैकल्पिक शैक्षिकविचार नहीं, बल्कि मानवीय शिक्षा की पुनर्स्थापना का प्रयास है। मध्यस्थदर्शन – जीवन विद्या हमें यह समझाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल करियर निर्माण नहीं, बल्कि जीवन निर्माण है। यदि शिक्षक, विद्यार्थी और शिक्षण संस्थाएँ इस दृष्टि को अपनाएँ, तो शिक्षा व्यवस्था भय और प्रतिस्पर्धा से मुक्त होकर विश्वास, सहयोग और सहअस्तित्व पर आधारित बन सकती है। यही वह दिशा है, जहाँ से एक जागृत मानव, एक संवेदनशील समाज और एक संतुलित विश्व का निर्माण संभव है।

" समझ के बिना स्वतंत्रता दिशाहीन हो जाती है "

ARTICLE-5

श्री विशाल गोपालभाई छान्या

जीवन विद्या अध्ययनार्थी एवं प्रैक्टिशनर,

सीवीएमएस सेल, आत्मीय विश्वविद्यालय

“ परंपरागत भारतीय दर्शन एवं मध्यस्थ दर्शन में कर्म सिद्धांत: एक तुलनात्मक अध्ययन “

- **प्रस्तावना**

कर्म सिद्धांत भारतीय दर्शन की केंद्रीय अवधारणा है। वैदिक, उपनिषदिक, स्मृति, पुराण, सांख्य-योग, वेदान्त तथा बौद्ध-जैन परंपराओं में कर्म को मानव जीवन, सुख-दुख, पुनर्जन्म और मोक्ष से गहरे रूप में जोड़ा गया है। आधुनिक काल में **मध्यस्थ दर्शन (A. Nagaraj)** कर्म को एक **अस्तित्ववादी, मानव-केंद्रित और अनुभवसिद्ध** रूप में पुनर्परिभाषित करता है। यह लेख परंपरागत कर्म सिद्धांत और मध्यस्थ दर्शन के कर्म सिद्धांत का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करता है।

1. कर्म की अवधारणा

1.1 परंपरागत भारतीय दर्शन में कर्म और फल

परंपरा में कर्म को मुख्यतः **शारीरिक और मानसिक क्रिया** के रूप में देखा गया है। कर्म के तीन प्रमुख भेद माने गए हैं :

- **क्रियमाण कर्म:** जिसका फल तुरंत मिलता है।
- **संचित कर्म:** जिनका फल भविष्य में प्राप्त होता है।
- **प्रारब्ध कर्म**: संचित कर्मों में से वे कर्म जो वर्तमान जीवन में फलित हो रहे हैं।

यह दृष्टि कर्म को कालखंडों में विभाजित कर, फल-भोग की अनिवार्यता पर बल देती है।

“ भौतिक साधन सुविधा दे सकते हैं, परंतु संतोष नहीं “

1.2 **मध्यस्थ दर्शन में कर्म और फल**

मध्यस्थ दर्शन में कर्म को **कायिक, वाचिक और मानसिक** स्तर पर **कृत, कारित और अनुमोदित** भेद से कुल **नौ प्रकार** में समझाया गया है। यहाँ प्रत्येक कर्म को **अनिवार्य रूप से फलवती** माना गया है :

- जीवन में **संस्कार** के रूप में और
- परंपरा में कोई भी कर्म का फल तुरंत प्रभाव रूप में मिलता है।

भौतिक-रासायनिक क्रियाएँ **शीघ्र परिणामी** हैं, जबकि जीवन संबंधी क्रियाएँ **दीर्घ परिणामी** होती हैं।

2. **कर्मफल की व्याख्या**

2.1 **परंपरा में कर्मफल भोगना**

परंपरा में कर्मफल को **पाप-पुण्य** के फल के रूप में देखा जाता है :

- पाप कर्म → दुख, पीड़ा, नर्क
- पुण्य कर्म → सुख, संपत्ति, स्वर्ग

मोक्ष की प्राप्ति के लिए सभी कर्मों के फल को भोगना अनिवार्य माना गया है।

2.2 **मध्यस्थ दर्शन में कर्मफल भोगना**

मध्यस्थ दर्शन में कर्मफल को **समस्या या समाधान** के रूप में समझा गया है।

- **ज्ञान के अभाव में किया गया कर्म** → समस्या = दुख
- **ज्ञान, विवेक और विज्ञान के साथ किया गया कर्म** → समाधान = सुख

यहाँ मानव परंपरा में **समाधान रूपी फल** को ही वांछनीय माना गया है, जिसे व्यक्ति दीर्घकाल तक भोगता है।

“ वास्तविक विकास बाहरी साधनों से नहीं,
आंतरिक जागरूकता से होता है “

3. **सुख-दुख का मूल कारण**

परंपरा	मध्यस्थ दर्शन
दुख या सुख के मूल में प्रारब्ध कर्म को भोगना	दुख या सुख के मूल में समज (ज्ञान + विवेक + विज्ञान) या नासमझ।
सत्व गुण, रजोगुण, तमोगुणी व्यक्ति की प्रारब्ध भोगना अलग - अलग।	जागृति या भ्रम के आधार पर प्रारब्ध भोगना
प्रारब्ध: पूर्व मीमांसा के अनुसार प्रत्येक कर्म एक अदृश्य शक्ति (अपूर्व) उत्पन्न करता है, यही अपूर्व उचित समय पर फल देता है जिसे प्रारब्ध के रूम में पहचाना गया है।	प्रारब्ध = जो जितना जान पाता है,उतना चाह नहीं पाता, जो जितना चाह पाता है उतना कर नहीं पाता और जो जितना कर पाता है उतना वह भोग नहीं पाता जो भोगा नहीं जाता वह प्रारब्ध है जो परंपरा में फल के रूप में मिलता रहता है।

परंपरा में सुख-दुख को गुण और प्रारब्ध से जोड़ा गया है, जबकि मध्यस्थ दर्शन में सुख-दुख को **मानव की समझ की स्थिति** से जोड़ा गया है।

4. **कर्म करने की पद्धति**

4.1 **परंपरागत दृष्टि**

- निष्काम कर्म → सत्त्वगुण
- फल की अपेक्षा से कर्म → रजोगुण
- फल न मिले तो कर्म त्याग → तमोगुण

“ समाधानयुक्त व्यक्ति ही समाज में समरसता ला सकता “

4.2 **मध्यस्थ दर्शन की दृष्टि**

- स्वार्थ: वैयक्तिकया पारिवारिक इन्द्रिय सुख-सुविधा के लिये जो विचार एवं व्यवहार है वह स्वार्थ है ।
- परार्थ: परार्थ-दूसरों की सुविधा के लिये जो विचार एवं व्यवहार और इसकी पूर्ति के लिये अर्थ नियोजन की प्राथमिकता ही परार्थ है।
- परमार्थ: जिस विचार एवं व्यवहार में समाधान सहित सर्व शुभ की उपलब्धि हो और समस्या का निराकरण हो और स्नेह का ही संबंध हो, इसे सर्व सुलभ कराने के लिये जो अर्थ नियोजन है, उसकी परमार्थ संज्ञा है।

मध्यस्थ दर्शन का यह वर्गीकरण कर्म को नैतिक-सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ता है।

5. पुनर्जन्म की अवधारणा

परंपरा में पुनर्जन्म को प्रारब्ध **भोग और ऋणानुबंधन** से जोड़ा गया है, जिसे विधाता-लेख के रूप में पूर्व निर्धारित माना जाता है।

मध्यस्थ दर्शन में पुनर्जन्म को **जागृति क्रम** का परिणाम माना गया है—

- सुसंस्कार आगे की शरीर यात्रा में सहायक।
- कुसंस्कार शरीर के साथ समाप्त हो जाते हैं।

6. प्रारब्ध, पुरुषार्थ और मोक्ष परंपरा

1) प्रारब्ध – संचित कर्म के आधार परअर्थ और काम को प्रारब्ध पर छोड़ देना

2) पुरुषार्थ – धर्म और मोक्ष के लिए पुरुषार्थ

प्रारब्ध के कारण सुख और दुख

पुरुषार्थ पूर्वक प्रारब्ध बदल शकते है, दोनों पूरक है ।

मध्यस्थ दर्शन

- अर्थ, काम और धर्म का उपयोग **भ्रम-मुक्ति (मोक्ष)** के लिए
- मोक्ष = **सही समझ की उपलब्धि**

“ न्यायपूर्ण व्यवहार ही स्वस्थ संबंधों का आधार है “

7. कर्मफल में स्वतंत्रता और परतंत्रता

परंपरा	मध्यस्थ दर्शन
कर्म करने में स्वतंत्र ,फल भोगने में परतंत्रता	जागृत मानव कर्म और फल दोनों में स्वतंत्र
फल भोगने में परतंत्रता के कारण ही पुनर्जन्म	जागृत मानव जन्म लेने के लिए स्वतंत्र
मोक्ष के लिए संचित कर्म से मुक्ति प्रारब्ध कर्म भोगने में जीव परतंत्र व्यवसायित्मिका बुद्धि पूर्वक कर्म करने से कर्म पर जीव का नियंत्रण	जागृति से अनिष्ट फल का प्रभाव समाप्त हो जाता है। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार जागृति पथ पर कदम रखते ही सारे ताप, श्राप, शोक समाप्त हो जाते है।

8. कर्म बंधन से मुक्ति

- **परंपरा में संचित कर्म बंधन से मुक्ति के लिए**

1) अबुद्ध स्थिति में किए हुए कर्म

2) बेशुद्ध स्थिति में किए हुए कर्म

3) मनुष्येत्तर योनि (भोग योनि) में किए हुए कर्म

4) कर्तापन के अहम को त्याग के (कर्तव्य कर्म / स्वधर्म) किए हुए कर्म

5) समष्टि के कल्याण के अर्थ में (महापुरुष / अवतार) किए हुए कर्म

6) निष्काम कर्म = शास्त्र आज्ञाया तो भगवद् प्रीति) पूर्वक कर्म बंधन से मुक्ति संभव है ।

" क्षमा संबंधों को पुनः जीवित करने की शक्ति है "

- **मध्यस्थ दर्शन में कर्म परिपाक और मोक्ष**

1) जीवन कर्ता पद में।

2) जीव शरीर चलाता जीवन में समस्त क्रिया वंशानुषंगीय विधि से नियंत्रित-जीवन में कोई परिमार्जन नहीं।

3) जीव चेतना वश मानव - चार विषय और पाँच संवेदनाओ के क्षेत्र में कर्म परंपरा में फल बंटने के रूप में धरती बीमार, मानव समस्याग्रस्त।

4) मानव चेतना सम्पन्न जीवन - तीन एषणाओ के साथ, जागृति का लोकव्यापीकरण के लिए कर्म ।

5) मोक्ष=दिव्य चेतना सम्पन्न जीवन –उपकार प्रवृति के साथ, जागृत मानव परंपरा के लिए कर्म।

- **निष्कर्ष**

परंपरागत भारतीय दर्शन कर्म को मुख्यतः फल-भोग, पाप-पुण्य और प्रारब्ध के संदर्भ में देखता है, जबकि मध्यस्थ दर्शन कर्म को मानव चेतना, समझ और सामाजिक परंपरा से जोड़कर देखता है। मध्यस्थ दर्शन में कर्म सिद्धांत नियति-केंद्रित न होकर जागृति-केंद्रित है, जहाँ मानव स्वयं अपने कर्म और कर्मफल का उत्तरदायी, जागृत और स्वतंत्र कर्ता बनता है। इस दृष्टि से मध्यस्थ दर्शन कर्म सिद्धांत को समकालीन मानव समस्याओं के समाधान की दिशा में एक व्यावहारिक और समग्र दर्शन के रूप में प्रस्तुत करता है।

- Courtesy: Jigar Ratnottar, CVMS Cell, Atmiya University

" जीवन का आधार प्रतिस्पर्धा नहीं, पूरकता है "

TESTIMONIAL-1

Harsh H. Vyas

Department: B.Tech-CSE

Atmiya University, Rajkot

“Human Values & Holistic Living Camp”

Attending the Human Values & Holistic Living camp at Chetan Vikas Vidyalaya, Parda Motala was a truly transformative experience for me. During these ten days, I learned that a meaningful life is built not only on academic knowledge, but also on values such as honesty, compassion, discipline, responsibility, and coexistence.

The daily routine of waking up early, engaging in physical exercise, farming activities, seva, and sessions on Madhyastha Darshan helped me develop discipline, time management, and self-awareness. Working in the fields gave me a deeper respect for farmers, nature, and the importance of sustainable living.

One of the most valuable aspects of this camp was learning how holistic living connects the individual with family, society, and the environment. The atmosphere of simplicity, cooperation, and mutual respect created a sense of inner peace and belonging.

“मूल्यहीन प्रगति अंततः असंतोष को जन्म देती है “

This experience has inspired me to live more consciously, responsibly, and harmoniously. I sincerely express my heartfelt gratitude to the CVMS Cell and Atmiya University for organizing such a meaningful and life-enriching program. Their efforts in promoting human values and holistic living have positively influenced my perspective towards life and society.

I feel grateful to have been part of this wonderful journey that strengthened both my practical skills and human values.

- Courtesy: Jigar Ratnottar,
CVMS Cell, Atmiya University

“ ज्ञान तभी सार्थक है जब वह व्यवहार में प्रकट हो “

TESTIMONIAL-2

Nazim Sandh
Department: B. Sc. , Microbiology
Atmiya University, Rajkot

"Journey from Inner Struggle to Purposeful Living through Madhyasth Darshan"

Coming into contact with Madhyasth Darshan (Jeevan Vidya) through the CVMS Cell became the turning point of my life. It marked the beginning of my journey toward coexistence, self-understanding and meaningful living.

Before this transformation, I was struggling deeply with depression, anxiety, fear and social disconnection. I had gradually lost trust in people, relationships and even in life itself. Before joining college, I had reached a stage where I felt hopeless, emotionally unstable and disconnected from my own existence.

During the Student Induction Program (SIP), a lecture delivered by Vijay Dandwani sir introduced me to the philosophy of Madhyasth Darshan and harmonious living. For the first time, I understood that happiness is not temporary excitement, but a continuous state of inner harmony and right understanding. His words deeply touched me and inspired me to visit the CVMS Cell for guidance.

" सही निर्णय वही है जो स्वयं और दूसरों के हित में हो "

I still remember sharing my pain emotionally and receiving patient support without any judgment. At one of the most difficult phases of my life, Ankit Kalariya sir became the strongest guiding force in my journey of transformation. Whenever I felt mentally disturbed, emotionally unstable, confused or stuck in any situation, I approached him for guidance. His clarity, patience, and understanding consistently helped me regain balance, confidence and stability.

Through Madhyasth Darshan, I gradually understood the meaning of coexistence, trust, affection, respect, relationships and mutual fulfillment. I learned the difference between physical facilities and true happiness rooted in right understanding.

One of the greatest transformations in my life was the improvement in my relationship with my father. The conflicts and misunderstandings between us gradually dissolved through understanding, patience and emotional stability. I learned to observe situations calmly instead of reacting emotionally.

“ मानव का सुख संबंधों में विश्वास, न्याय और संतुलन से उत्पन्न होता है “

This philosophy transformed my fear, negativity and instability into confidence, responsibility and inner strength. It gave me the courage to express myself despite my struggles and limitations. The person who once wanted to escape from life now wishes to live meaningfully and contribute toward harmony in society.

I can confidently say that Madhyasth Darshan, along with the guidance of Vijay Danvani sir and Ankit Kalariya sir, did not merely change my life — they helped me rediscover myself through coexistence, understanding, and purposeful living.

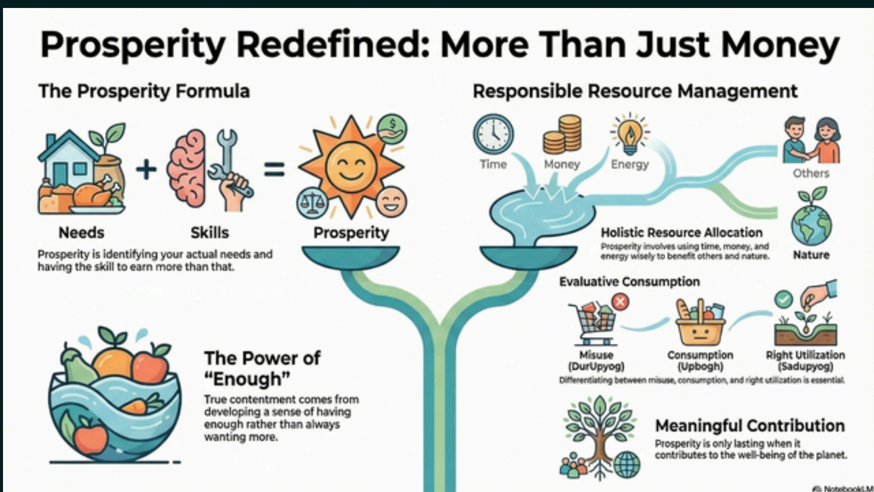

- Courtesy: Jigar Ratnottar,
CVMS Cell, Atmiya University

“ नैतिकता, उत्तरदायित्व और सहभागिता मानव जीवन के आधार स्तंभ हैं ”

List of Activities

List of Activities Performed by CVMS Cell Members (April to June, 2026)

Type of Activity	Facilitator	Dates
4-Day FDP on 'Holistic Living' at Atmiya School, Rajkot	Jaykumar Patel	08th April, 2026
	Jigar Ratnottar	08th to 11th April, 2026
	Dr. Vijaykumar Dandwani	
	Vishal Chhanya	
	Ankit Kalariya	
1-Day Faculty Awareness Program on 'Jeevan Vidya' at Sigma University, Baroda	Dr. Vijaykumar Dandwani	18th April, 2026
Session on 'Jeevan Vidya' for Society, Bhavnagar	Jaykumar Patel	25th April, 2026
3-Day Faculty Development Program on 'Chetna Vikas Mulya Shiksha' at R D School, Mundra	Dr. Vijaykumar Dandwani	29th April to 01st May, 2026
6-Day Shibir on 'Adhyayan Bindu' at Atmiya Vidya Niketan, Ahamadabad	Vishal Chhaya	30th April to 05th May, 2026

List of Activities

6-Day Shibir on 'Jeevan Vidya' at Atmiya Vidya Niketan, Ahamadabad	Ankit K. Kalariya	30th April to 05th May, 2026
Session on 'Happiness & Wellness' at St. Xavier School, Mundra	Dr. Vijaykumar Dandwani	30th April, 2026
7-Day 'Jeevan Vidya Parichay Shibir' at Atmiya Vidhyalaya, Vadodara	Jaykumar Patel	03rd to 09th May, 2026
7-Day 'Jeevan Vidya Parichay Shibir' at Leo School, Surat		21st to 27th May, 2026
5-Day 'Jeevan Vidya Parichay Shibir' at Purusharth Vidhyalaya, Bhanvad		30th May to 03rd June, 2026
Expert Session on 'Human Values & Harmonious Relationship' at Nexus School, Rajkot	Mrs. Nisha Nesadia	1st June, 2026
Teachers Training Programme on 'Purpose of Education: Humanization' at Shri Vivekanand School, Babara	Dr. Devendra Kaneriya	1st June to 3rd June, 2026

List of Activities

Teachers Training Programme on 'Purpose of Education: Humanization' at Sarvodaya School, Moviya	Dr. Devendra Kaneriya	4th June to 5th June, 2026
3-Day Faculty Development Program on ‘Chetna Vikas Mulya Shiksha’ at St. Xavier School, Mundra	Dr. Vijaykumar Dandwani	04th to 06th June, 2026
4-Day FDP on ‘Jeevan Vidya’ at Atmiya University, Rajkot	Ankit K. Kalariya	08th to 13th June, 2026
Expert Session on ‘Madhyasth Darshan Ek Vikalp’ at Atmiya University, Rajkot	Jaykumar Patel	17th June, 2026
Introductory Session on ‘Jeevan Vidya’ for Parents of First Year Students, FoBC, Atmiya University	Jaykumar Patel	22nd June, 2026
4-Day (8-Hrs) Student Orientation Program on ‘Education for Happiness, Prosperity & Responsible Living’	CVMS Team	23rd to 27th June, 2026

FDP ON 'HOLISTIC LIVING' AT ATMIYA SCHOOL, RAJKOT (BENEFICIARIES 70+)

FACULTY AWARENESS PROGRAM ON ‘JEEVAN VIDYA’ AT SIGMA UNIVERSITY, BARODA (BENEFICIARIES 50+)

5-DAY ‘JEEVAN VIDYA PARICHAY SHIBIR’ AT PURUSHARTH VIDHYALAYA, BHANVAD (BENEFICIARIES 100+)

3-DAY FDP ON ‘CHETNA VIKAS MULYA SHIKSHA’ AT R D SCHOOL, MUNDRA (BENEFICIARIES 30+)

6-DAY SHIBIR ON ‘ADHYAYAN BINDU’ AT ATMIYA VIDYA NIKETAN, AHAMADABAD (BENEFICIARIES 70+)

4-DAY FDP ON ‘JEEVAN VIDYA’ AT ATMIYA UNIVERSITY, RAJKOT (BENEFICIARIES 70+)

DESIGNED BY

VIREN BHADESHIYA

B.Tech Information Technology

Atmiya University , Rajkot

NANDITA JAYSWAL

B.Tech Computer Science Engineering

Atmiya University , Rajkot

पूज्य बाबा श्री ए. नागराज जी

कर्नाटक प्रांत के जन्में श्री अग्रहार नागराज ने सन १९५०-१९७५ ‘अज्ञात को ज्ञात’ करने अमरकंटक (म.प्र.) में साधना किया| साधना-समाधि-संयम विधि से उन्हें सम्पूर्ण अस्तित्व का दर्शन हुआ, चैतन्य रूपी परमाणु ‘जीवन’ के सम्पूर्ण स्वरूप का ज्ञान हुआ|

उन्हें ‘सहअस्तित्व रूपी’ यथार्थता, वास्तविकता एवं सत्यता अंतिम सत्य के रूप में समझ आया, अस्तित्व में वे अनुभव पूर्वक “जागृत” हुए| जिसे मानव के सम्मुख उन्होंने एक नए दर्शन – ‘मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद’ के रूप में प्रस्तुत किया है|

भूमि स्वगर्ताम् यातु, मनुष्यो यातु देवताम् ।
धर्मो सफलताम् यातु, नित्यम् यातु शुभोदयम् ।।

Volume: I Issue No.: 02
Year: June, 2026